IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में किशोरों के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन"

श्वेता सिंह,* डॉ संगीता रानी
एम.एड छात्रा,* सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्विद्यालय मेरठ,उत्तर प्रदेश

: शोध सार

प्रस्तुत शोध में उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष और महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों कातुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध का उदेश्य उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष और महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध के निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति हेतु आंकड़े एकत्रित करने के लिए मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा बारह के किशोर विद्यार्थियों को इस अध्ययन की जनसँख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है एवं प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से मेरठ शहर के 10 विद्यालयों का चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 10-10 पुरुष और महिला किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस प्रकार 200 किशोरविधार्थियों को न्यायदर्श के रूप में चयन किया गया है । आंकड़ो के विश्लेषण के लिए उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष और महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन मापने के लिए सामाजिक-आर्थिक स्थिति के पैमाने को मापने के लिए राजीव भारद्वाज द्वारा तैयार किए गए सामाजिक आर्थिक पैमाने का उपयोग किया गया एवं आध्यात्मिक मूल्य पैमाने को मापने के लिए फौजिया नज़म, अकबर हुसैन और एस. एम.खान द्वारा तैयार आध्यात्मिक मूल्य पैमाने का उपयोग किया गया।तथा काई स्कायर एवं टी परिक्षण की गणना की गयी।आंकड़ों से प्राप्त परिणामों के आधार पर ये ज्ञात हुआ कि उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों केआध्यात्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है। एवं उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यो मे कोई सार्थकअंतर नहीं है।

मुख्य शब्द -सामाजिक-आर्थिक स्थिति ,आध्यत्मिक मूल्य

1.प्रस्तावना-शिक्षा का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे मनुष्य में ज्ञान का प्रसार होता है। इंसान की बुद्धि का विकास शिक्षा अर्जित करने से ही होता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने और भविष्य में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा एक बहुत महत्वपूर्ण साधन है। और जीवन का सार है। शिक्षा बालक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सक्रीय भूमिका निभाती है और,यह हमें जीवन के कठिन समय में चुनौतियों से सामना करने में सहायता करती है। क्योंकि शिक्षा एक ऐसा माध्यम जो बालक के अध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है,

शिक्षा किसी धर्म, जाति, लिंग में भेदभाव नहीं करती है। सबको समान रूप से शिक्षा एक जैसी ही मिलती है चाहे वह धनवान हो या निर्धन हो। विद्यालय कोई भी हो शासकीय या अशासकीय सभी में शिक्षा समान रूप से विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है। कुछ लोगों का मानना है कि जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वे ही शिक्षित हो सकते है, और उनके आध्यत्मिक मूल्य भी मजबूत होते है ,या जो सामाजिक रूप से सुदृढ़ होते है वे ही उन्नति कर सकते है।परन्तु ऐसा नहीं है। कुछ विद्यार्थियों के माता-पिता की आर्थिक-सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं होती है जिसका कि उनकी बुद्धिलब्धि, आध्यत्मिक मूल्यों एवं उपलब्धि परअच्छा असर पड़ता है किशोरों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति - उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। इस युग में, वे अपने कैरियर और शिक्षा के माध्यम से अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश करते हैं, जबकि वे अपनी परिवार को भी संतुष्ट रखने की कोशिश करते हैं। कई किशोर ऐसे होते हैं जो अपने परिवार के आर्थिक दबाव के कारण शिक्षा या कैरियर के माध्यम से अपने लक्ष्यों को हासिल करने में समर्थ नहीं होते हैं। आर्थिक संघर्ष के कारण, कई किशोर शिक्षा को छोड़ने के मजबूर हो जाते हैं और अन्य आर्थिक गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं, जिससे उनके भविष्य की संभावनाएँ कम हो जाती है। इसके अतिरिक्त आर्थिक संघर्ष उनकी मानसिक स्थिति को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे उन्हें दबाव, तनाव, और चिंता का सामना करना पड़ता है।और इसी कारण किशोरों के आध्यत्मिक मूल्य प्रभावित होते हैसामाजिक आर्थिक स्थिति किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों पर गहरा प्रभाव डाल सकती है, क्योंकि वे इस उम्र में अपने आत्म-समझ, धार्मिकता, और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर बढ़ रहे होते हैं। इस उम्र में किशोरों का समाज में स्थान, संबंध, और परिचय का महत्वपूर्ण रोल होता है, और उनकी सामाजिक स्थिति उनके आध्यात्मिक मूल्यविकास को असर डालती है।

सामाजिक स्थिति के प्रभाव की बात करते समय, हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि इसका प्रभाव प्राथमिक रूप से समाज के रूप, संरचना, और मूल्यों पर होता है, जिनमें आध्यात्मिक मूल्य भी शामिल होते हैं।

इस प्रकार, सामाजिक स्थिति किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों पर प्रभाव डालती है और उनके धार्मिक और आध्यात्मिक विकास को निर्दिष्ट करती है। इसलिए, समाज में समाजिक समरसता, न्याय, और समर्थ आध्यात्मिक संरचना सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

किशोरों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति-उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।आध्यात्मिक एक व्यक्ति के आंतरिक संबंधों धार्मिक आदर्श और मानवता के प्रति समर्थन के साथ जुड़ी हैं। आध्यात्मिक मूल्यों के मध्य नजर किशरों को जीवन का अर्थ और उद्देश्य समझने में मदद मिल सकती है किशोर के आध्यात्मिक मूल्यों का विकास कहीं तत्व पर निर्भर करता है।इस अध्ययन का उद्देश्य यह जांचना है कि किशोरों के आध्यात्मिक मूल्य उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर कैसे भिन्न होते हैं।आध्यात्मिक मूल्यों में पारलौकिक या पवित्र से संबंधित विश्वासों, प्रथाओं और अनुभवों को शामिल किया गया है, औरवे व्यक्तियों की पहचान, कल्याण और उद्देश्य की भावना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों पर सामाजिक और आर्थिक कारकों के प्रभाव की जांच करके, शिक्षा के रूप इस अध्ययन का उद्देश्य किशोर विकास की जटिलताओं और व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक प्रभावों के बीच परस्पर क्रिया की गहरी समझ में योगदान करना है।

किशोरों के बीच सामाजिक और आर्थिक स्थिति और आध्यात्मिक मूल्यों के बीच संबंधों को समझना महत्वपूर्ण सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रभाव रखता है सबसे पहले, यह उन तंत्रों पर प्रकाश डालता है जिनके माध्यम से व्यापक सामाजिक संरचनाएं और असमानताएं किशोरों की आंतरिक दुनिया को प्रभावित करती है, जिसमें उनके विश्वास, मूल्य और अस्तित्व संबंधी चिंताएं शामिल हैं। दूसरे, यह हस्तक्षेप और समर्थन के लिए संभावित रास्ते में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, विशेष रूप से कमजोर या

हाशिए पर युवा आबादी के लिए जो अपनी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण आध्यात्मिक विकास के लिए अतिरिक्त बाधाओं का सामना कर सकते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन मौजूदा साहित्य में एक उल्लेखनीय अंतर को संबोधित करता है, जिसने अक्सर किशोरावस्था के दौरान सामाजिक पहचान की प्रतिच्छेदन और आध्यात्मिकता पर उनके प्रभाव को नजरअंदाज कर दिया है। तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाने से, यह अध्ययन विभिन्न सामाजिक और आर्थिक संदर्भों में आध्यात्मिक मूल्यों में सूक्ष्म पैटर्न और विविधताओं को उजागर करना चाहता है, जिससे युवा लोगों के बीच आध्यात्मिक विकास और अर्थ-निर्माण के विविध मार्गों की हमारी समझ समृद्ध होती है।

इस अध्ययन में किशोरों के बीच समग्र विकास और कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतिगत पहल, शैक्षिक कार्यक्रमों और नैदानिक हस्तक्षेपों को सूचित करने की क्षमता है। क्या सामाजिक स्थिति किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों पर प्रभाव डालती है, और यह प्रभाव कैसे महसूस होता है? क्या आर्थिक स्थिति किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों को प्रभावित करती है. और यह प्रभाव किस तरह से दिखाई देता है विभिन्न सामाजिक समूहों में किशोरों के धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभवों की तुलना करके, कौन से समाजिक परिस्थितियों उनके आध्यात्मिक मूल्यों को प्रभावित करती है।क्या किशोरों के धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों में विभिन्न समाजिक और आर्थिक समृद्धियों के बीच अंतर होता है, और अगर हां, तो यह अंतर कैसे प्रत्यक्ष होता है? क्या उपयुक्त धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा की प्राप्ति किशोरों के धार्मिक मूल्यों को बढ़ावा देती है, और कौन से सामाजिक और आर्थिक अवस्थाएँ इसका समर्थन करती हैं? क्या किशोरों के आध्यात्मिक और धार्मिक अनुभवों की भिन्नताओं में समाजिक और आर्थिक स्थिति के बीच संबंध है, और अगर है , तो यह संबंध किस प्रकार का है?

सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में आध्यत्मिक मूल्य के महत्व को देखते हुए यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में किशोरों के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन का क्या प्रभाव पड़ता है? यह भी देखा गया शोध अध्ययन के आधार पर अभी तक उपयुक्त विषय "सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में किशोरों के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन" पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ अतः शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शोध समस्या का चयन किया गया।

प्रस्तुत शोध शीर्षक से संबधित सवेक्षण –

अग्रवाल, डा० अंजना, (2017) ने "आगरा शहर के बी०टी०सी० प्रषिक्षणार्थियों के अभिभावकों (पुरुष व महिलाओं) का आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अध्ययन" के निष्कर्षों में पाया कि बी०टी०सी० स्तर पर छात्रों का आध्यात्मिक दृष्टिकोण छात्राओं की अपेक्षा उच्च-स्तर का होता है।

मंजुला, वी० (2017) ने "स्नातक स्तर पर कला व विज्ञान वर्ग अभिभावकों के आध्यात्मिक विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन" में पाया कि स्नातक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अभिभावकों का आध्यात्मिक दृष्टिकोण का स्तर कला वर्ग के अभिभावकों से उच्च का होता है।

मैकुलम (2017) ने "भावनात्मक बुद्धि एवं सामाजिक स्थिति के बीच संबंध के अध्ययन" के निष्कर्ष में पाया गया है कि भावनात्मक बुद्धि व सामाजिक स्थिति संपर्क के बीच सकारात्मक संबंध हैं।

रानी, सुषमा (2018)ने "मेरठ के बी०एड० कॉलेज अभिभावकों के प्रति अध्यामिक दृष्टिकोण का अध्ययन" किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि बी०एड० कॉलेज के ग्रामीण अभिभावकों में आध्यात्मिक विश्वास ज्यादा पाया गया और भी०एड० कोलेज के ग्रामीण फरकली के अभिभावकों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण उच्च-स्तर का होता है।

प्रेमलता गांधी 2018"ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक-आर्थिक मूल्यों के बीच संघर्ष पर शोधकर्ता ने अपने अध्ययन "में पाया है की विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकतर विद्यार्थी ग्रामीण

परिवेश के होते हैं जिनको सामाजिक मूल्यों व आर्थिक मूल्यों को मानने के लिए बाध्य किया जाता है जिससे उनमें उन्माद व संघर्ष की भावना जाग्रत होती है।

काटोच, सुमन (2018)ने "हिमाचल प्रदेश के माध्यमिक शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन" किया। निष्कर्ष में पाया गया है कि महिला शिक्षक प्रशिन्तुओं का आध्यात्मिक दृष्टिकोण और माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षुओं का आध्यात्मिक दृष्टिकोण का उच्च-स्तर होता है।

श्रीलता, गोली (2019)ने "बागपत जिले के स्नातक स्तर पर विज्ञान वर्ग के अभिभावकों (पुरुष व महिलाओं) के आध्यात्मिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन "किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि स्नातक स्तर पर विज्ञान वर्ग अभिभावकों (पुरूष व महिलाओं) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मोहमद स्वाद व बालूनी (2021) "उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन" में पाया की सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों का निम्न सामाजिक- आर्थिक स्थिति पर मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं मध्यम व उच्च सामाजिक-आर्थिक पर मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तरपाया गया। सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिकाओं का निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं मध्यम व उच्च सामाजिक-आर्थिक पर मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया।

कल्पना कुमारी एवं डॉ सीमा डे ने (2021)"बाल श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन: "राँची जिला के संदर्भ में पाया की बाल-श्रमसमस्या एक चुनौती बन गई है। देश में कामकाजी बच्चों की वास्तविक संख्या बहुत ज्यादा है। जातिवाद, गरीबी, परिवार काआकार, तथा आय, शिक्षा का स्तर आदि बाल श्रमिक को गम्भीर समस्या के रूप में प्रकट करने के लिए उत्तरदायी है। बाल- श्रम समस्या एक गहन सामाजिक-आर्थिक समस्या है। यह एक ऐसी बुराई है जिसके लिए समाज के सभी वर्गों में जागरूकता लाने के साथ-साथ सोच का नजरिया भी बदलने की जरुरत है।

समस्या कथनः

"सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में किशोरों के आध्यात्मिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्यः

1. उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों की तुलना करना
2. उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाली किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों की तुलना करना।

शोध परिकल्पना

1. उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध परिसीमन

1. अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर तक सीमित किया गया हैं।
2. अध्ययन को उच्च माध्यमिक विद्यालय के 12वीं कक्षा के किशोर छात्रों तक सीमित किया गया हैं।

शोध की जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में मेरठ शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 12 वीं कक्षा के किशोर इस अध्ययन की के रूप में लिए गए है।

सांख्यिकीय की प्रविधियाँ

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेष्ण के लिए काई स्कायर एवं टी परिक्षण की गणना की गयी ।

आंकड़ों का विश्लेषण तथा विवेचन

उद्देश्य-1. उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों की तुलना करना

परिकल्पना संख्या 1-उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना की सार्थकता की गणना से संबधित आंकड़ों का विश्लेषण तालिका सं0 (1.1)में किया गया है।

तालिका सं0 (1.1)

समूह	अवलोकित आवृति	प्रत्याशित आवृति	मान	परिणाम
उच्च	24	33.3	6.85	सार्थकहै
सामान्य	45	33.3		
निम्न	31	33.3		

तालिका संख्या 1-से स्पष्ट होता है की उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में उच्च सामजिक आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यत्मिक मूल्य का विश्लेषण करते हुए जेड प्रतांक के आधार पर परिणाम की जाँच की गयी हें जिसमे पाया गया है की उच्च, आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों का आध्यत्मिक मूल्य उच्च स्तर का है, तथा सामान्य एवं निम्न आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों का आध्यत्मिक मूल्य निम्न स्तर का है ।

परिकल्पना**1**- से स्पष्ट होता है कि उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों का अध्ययन करते हुए काई स्कायर के मान की गणना की गई। जिसमें उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों का काई स्कायर का मान 6.85 प्राप्त हुआ जो स्वतन्त्रता अंश 2 और 0.05 सारणी मान 5.991 से अधिक है। जिससे स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक और निम्न आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में सार्थकअंतर है। अतः परिकल्पना संख्या 1 को अस्वीकृत करते हुए 95% विश्वास के साथ कहा जाता है कि उच्च ,सामान्य और निम्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों में सार्थकअंतर है।

उद्देश्य संख्या 2-उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों की तुलना करना।

परिकल्पना संख्या 2-उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
उपरोक्त परिकल्पना की सार्थकता की गणना से संबधित आंकड़ों का विश्लेषण तालिका सं0 (2)में किया गया है।

तालिका सं0 (2)

समूह	अवलोकित आवृति	प्रत्याशित आवृति	मान	परिणाम
उच्च	26	33.3	4.57	सार्थकअंतरनहीं है
सामान्य	43	33.3		
निम्न	31	33.3		

तालिका संख्या 2-से स्पष्ट होता है की उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में उच्च सामजिक आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यत्मिक मूल्य का विश्लेषण करते हुए जेड प्रतांक के आधार पर परिणाम की जाँच की गयी हें जिसमे पाया गया है की उच्च, सामान्य एवं निम्न आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों का आध्यत्मिक मूल्य उच्च स्तर का है,सामान्य एवं निम्न आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों काआध्यत्मिक मूल्य सामान्य स्तर का है ।
परिकल्पना 2- से स्पष्ट होता है कि उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों का अध्ययन करते हुए काई स्कायर के मान की गणना की गई। जिसमें उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक,आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों का काई स्कायर का मान 4.57 प्राप्त हुआ जो स्वतन्त्रता अंश 2 और 0.05 सारणी मान 5.991 से कम है। जिससे स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक और निम्न आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।अतः परिकल्पना संख्या 1 को स्वीकृत करते हुए 95% विश्वास के साथ कहा जाता है किउच्च ,सामान्य और निम्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति वाले महिला किशोरों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन निष्कर्ष

शोध के परिणाम आने के बाद यह आवश्यक हो जाता है की परिणाम के साथ निष्कर्षों की भी विवेचना किया जाये ताकि शोध समस्या का व्यवहारिक समाधान को प्रस्तुत किया जा सके।अध्ययन की समस्या से सम्बंधित शोध अध्ययन में पाया गया कि -

1 उच्च सामाजिक, सामान्य और निम्न आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।अतः परिकल्पना संख्या 1 को अस्वीकृत करते हुए 95% विश्वास के साथ कहा जाता है कि उच्च , सामान्य और निम्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों में सार्थक अंतर है। संभावित कारण यह हो सकता है कि उच्च सामाजिक ,सामान्य और निम्न आर्थिक स्थिति वाले पुरुष किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर इसलिए है की उच्च समाज में रहने वाले किशोरों के पास आमतौर पर अधिक संसाधन होते हैं,जैसे कि उच्च शिक्षा,साधनों की अधिकता,और परिवार या समुदाय से साधनों का समर्थन। इसके विपरीत,निम्न आर्थिक स्तर के किशोरों के पास इन संसाधनों की कमी होती है, जिससे उन्हें आध्यात्मिक मूल्य विकास के लिए आवश्यक सामग्री और समर्थन कम हो सकता है।

2 उच्च सामाजिक और निम्न आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों के आध्यात्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना संख्या 2 को स्वीकृत करते हुए 95% विश्वास के साथ कहा जाता है कि उच्च ,सामान्य औ निम्न सामाजिक,आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों में कोई सार्थकअंतर नहीं है। संभावित कारण यह हो सकता है कि चाहे महिला उच्च समाज में रहने वाली या निम्न निम्न आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोर में दया,करुणा, संतोष, वाणी विनिम्रता,ईश्वर में आस्था और स्नेह महिला किशोरों में पाया जाता है। इसलिए उच्च, सामान्य और निम्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति वाली महिला किशोरों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कन्नौजिया, कृष्ण कुमार व सिंह, जे.पी. (2009), 'गोण्डा जनपद के स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन', डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उ०प्र०, पृ०सं० 68

कैला, शोमा अग्रवाल, (2014), 'मूल्यशिक्षा', आर.लाल बुक डिपों, मेरठ, पृ.सं.-03

ठाकुर, रचना, (2018), "ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन, "रानी दुर्गावती विवविद्यालय, जबलपुर, (म.प्र.). www.ijcrt.org 2018 IJCRT Volume 6, issuel, PP:739-744

त्यागी, गुरसरनदास व नन्द, विजय कुमार, (2011-12), 'उदीयमान भारत में शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.सं.-361

नजम, फोजिया, हुसैन, अकबर व खान, एस.एम. (2014), "आध्यात्मिक मूल्य मापनी", नेशनल साइक्लोजिकल कॉरपोरेशन आगरा, (उ.प्र.), पृ.सं.-01-11

पांडे, कल्पता और श्रीवास्तव (1998) एसएस (भारतीय और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य), "शैक्षिक मनोविज्ञान"इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश: आईपीएच प्रकाशन

भटनागर, ए०बी० लाल, रमन बिहारी जोशी और सुरेन्द्र चन्द (2001) "शैक्षिक मनोविज्ञान': 'शिक्षा मनोविज्ञान और प्रारम्भिक सांख्यिकी, लखनऊ, उत्तर प्रदेशः साहित्य प्रकाशन

मित्तल, एम०एल० (2003), शिक्षा सिद्धान्त, मेरठ, उत्तर प्रेदशः सूर्या (आर०लाल० बुक) प्रकाशन

राय, पारसनाथ (2003), 'शोध परिचय आगरा, उत्तर प्रदेश: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन

लाल, रमन बिहारी व पलोड़, सुनीता, (2016), 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय परिदृश्य, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं.-350,354